डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण
एम्.ए.,बी.एड्.,पीएच्.डी.
प्रपाठक एवं अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर.

संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि ***कु. सगुणा सदाशिव पाटील*** द्वारा लिखित ***''सुशीला टाकभौरे की कहानियों का अनुशीलन''*** लघु शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

स्थान - कोल्हापुर.

तिथि - 9 / 3 / 2001

(डॉ. अर्जुन चव्हाण)
अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६००४.

डॉ. शिवाजी विष्णु निकम
एम्.ए., पीएच्.डी.
स्नातकोत्तर अध्यापक,
दादा पाटील महाविद्यालय,
कर्जत, ता. अहमदनगर.

प्रमाणपत्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि ***कु. सगुणा सदाशिव पाटील*** ने मेरे निर्देशन में ***''सुशीला टाकभौरे की कहानियों का अनुशीलन''*** यह लघु शोध-प्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए लिखा है। पूर्व-योजनानुसार संपन्न इस कार्य में शोध-छात्रा ने मेरे सुझावों का पूर्णत: पालन किया है। जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए हैं मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। शोध-छात्रा के कार्य से मैं पूरी तरह से संतुष्ट हूँ। इस लघु शोध-प्रबंध को आद्योपांत पढ़कर ही मैं इसे परीक्षणार्थ अग्रेषित करने हेतु अनुमति प्रदान करता हूँ।

स्थान :- कोल्हापुर।
तिथि :- 9 | 3 | 2001

शोध-निर्देशक
(डॉ. शिवाजी विष्णु निकम)

प्रख्यापन

''सुशीला टाकभौरे की कहानियों का अनुशीलन'' यह लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। प्रस्तुत रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी भी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 9 | 3 | 2001

शोध-छात्रा

(कु. सगुणा सदाशिव पाटील)

प्राक्कथन

प्राक्कथन

विषय चयन की प्रेरणा -

मुझे बचपन से ही कहानियाँ पढ़ने, सुनने का शौक रहा है। इसी कारण जब बी. ए. तथा एम्. ए. में किसी भी साहित्यकार की कोई भी कहानी पढ़ती थी तब उस साहित्यकार की अन्य रचनाएँ पढ़ने की उत्सुकता मेरे मन में जागृत हो जाती थी। इसी कहानी पढ़ने की रुचि ने मुझे पत्रिकाएँ पढ़ने की भी प्रेरणा दी। मैंने जब सुशीला जी की सभी कहानियाँ पढ़ी तब मेरे मन में इस संदर्भ में शोध करने की इच्छा जागृत हुई और मैंने अपने शोध-निर्देशक डॉ. शिवाजी निकम जी से चर्चा कर इस विषय में अपना लघु शोध-प्रबंध लिखने की स्वीकृति प्राप्त की है।

विषय चयन का महत्त्व -

सबसे पहले मेरे सामने यह सवाल खड़ा हो गया कि अब तक सुशीला जी के दो कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं। उनके दो ही कहानी संग्रहों पर शोध-कार्य किया जा सकता है ? मैंने अपने शोध-निर्देशक से सलाह मशवरा करके इस विषय के बारे में स्वीकृति ली। उनके साहित्य पर अभी तक कोई संशोधन कार्य नहीं हुआ है। इसीलिए मैंने 'सुशीला टाकभौरे की कहानियों का अनुशीलन' यह विषय एम्. फिल. के लिए चुना है।

आधुनिक युग की दलित महिला लेखिकाओं में सुशीला जी का नाम अग्रनिय है। उनकी कहानियों में दलितों की समस्याओं का सजीव चित्रण, नारी समस्याओं का अंकन, नारी मन को खोलना आदि पहलुओं को अंकित किया है। इसी कारण मैंने उनकी कहानियों को ही अपने अध्ययन का केंद्र बनाया और 'सुशीला टाकभौरे की कहानियों का अनुशीलन' इस विषय पर लघु शोध-प्रबंध लिखने के लिए शुरूआत की।

जब मैंने 'सुशीला टाकभौरे की कहानियों का अनुशीलन' इस विषय पर शोध करना शुरू किया तो मेरे सामने निम्नलिखित सवाल खड़े हो गए -

1. क्या सुशीला जी के व्यक्तित्व का उनके कृतित्व पर परिणाम हुआ है ?
2. सुशीला जी की कहानियों की वस्तुगत विशेषताएँ कौन-सी हैं ?
3. सुशीला जी की कहानियों की चरित्रगत विशेषताएँ क्या हैं ?
4. सुशीला जी ने अपनी कहानियों में कौन-सी समस्याओं का अंकन किया है ?
5. सुशीला जी की कहानियों का शिल्प कैसा है ?

इन सभी सवालों का जवाब प्राप्त करने का प्रयास ही मेरा लघु शोध-प्रबंध है । अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को निम्न लिखित अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय - ''सुशीला टाकभौरे : व्यक्तित्व एवं कृतित्व''

इस अध्याय में सुशीला जी के व्यक्तित्व को जन्म तथा बचपन, माता-पिता, शिक्षा-दीक्षा, परिवार, अर्थोपार्जन, बाह्य व्यक्तित्व, आंतरिक व्यक्तित्व (मिलनसार, अतिथ्यशील, संवेदनशील, भावुक, कल्पनाशील, हँसमुख) रूचियाँ, साहित्यिक प्रेरणा, पुरस्कार आदि विभागों में विभाजित किया है। सुशीला जी के कृतित्व के अंतर्गत उनके कहानी संग्रह, काव्य संग्रह, लेख संग्रह, विवरणात्मक पुस्तकें आदि का परिचय प्रस्तुत कर अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

द्वितीय अध्याय - ''सुशीला जी की कहानियों का वस्तुगत अध्ययन''

इस अध्याय के प्रारंभ में वस्तुतत्त्व का महत्त्व, घटना-विन्यास की दृष्टि से कहानी की वस्तु के लिए आवश्यक तत्त्व आदि की सैद्धांतिक विवेचना प्रस्तुत कर सुशीला जी की कहानियों में वस्तु तत्त्व को जाँचने के लिए उनके कहानी संग्रह 'टूटता वहम' और 'अनुभूति के घेरे' की एक-एक कहानी की विवेचना प्रस्तुत कर दी गई है और अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

तृतीय अध्याय - ''सुशीला जी की कहानियों का चरित्रगत अध्ययन''

इस अध्याय में चरित्र-चित्रण का स्वरूप, कहानी की पात्र-योजना, कहानी में चरित्र-चित्रण का महत्त्व इन बातों को सैद्धांतिक दृष्टि से प्रस्तुत करने के पश्चात् सुशीला जी की कहानियों के पात्रों का चरित्र-चित्रण किया गया है। अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय - ''सुशीला जी की कहानियों में चित्रित समस्याएँ''

चतुर्थ अध्याय में सुशीला जी की कहानियों में चित्रित समस्याओं का विस्तृत विवेचन किया है। सुशीला जी की कहानियों में दलित समस्या का प्रमुख स्वर है। इसके साथ ही नारी समस्या और सामाजिक समस्याओं का भी उन्होंने चित्रण किया है और अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

पंचम अध्याय - ''सुशीला जी की कहानियों का शिल्पगत अध्ययन''

इस अध्याय में शिल्प का स्वरूप, शिल्प संबंधी कुछ विद्वानों के विचार, शिल्प की अनिवार्यता आदि की सैद्धांतिक विवेचना कर फिर कथावस्तु, पात्र, चरित्र-चित्रण, कथोपकथन, देश-काल तथा वातावरण, भाषा शैली और उद्देश्य इन तत्त्वों के आधार पर सुशीला जी के कहानियों के शिल्प को जाँचा गया है और अंत में निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

उपसंहार -

इन अध्यायों के तथ्य या सार अंत में उपसंहार के रूप में प्रस्तुत किया गया है और अंत में संदर्भ ग्रंथ सूची दी है।

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत शोध-प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सहायता करनेवाले गुरुजनों, हितचिंतकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ।

यह लघु शोध-प्रबंध श्रद्धेय गुरूवर्य डॉ. शिवाजी निकम जी के प्रेरणादायी निर्देशन का फल है। उनके प्रोत्साहन, प्रेरणा तथा स्नेह के कारण यह कार्य पूर्ण हो पाया है। अपनी कार्यव्यस्तता के बावजूद भी उन्होंने मेरे अनुसंधान कार्य को निरंतर गतिशील बनाए रखा। उन्होंने मेरी अस्मिता को जो ज्ञान-दृष्टि दी, अगर मैं उसे जीवन में सजग रख सकी तो वह उनके प्रति मेरा आभार-प्रदर्शन होगा।

श्रद्धेय सुशीला जी का भी इस कार्य में अमूल्य योगदान रहा है। अपने आत्मीय व्यवहार से मुझे जीत लिया। अपनी कार्य व्यस्तता में से वक्त निकालकर निरंतर पत्रों द्वारा उन्होंने आवश्यक सामग्री भेज दी और मेरा मार्गदर्शन भी किया। मैं उनकी सदैव ऋणी रहूँगी।

आदरणीय गुरूवर्य डॉ. वसंत मोरे, डॉ. पांडुरंग पाटील, डॉ. अर्जुन चव्हाण, प्रा. बी. डी. कदम, प्रा. खिलारे, डॉ. के. पी. माळी, आदि का समय-समय पर प्राप्त मार्गदर्शन मेरी उम्मीद तथा जिज्ञासा बढ़ाता रहा। इन सभी की मैं आभारी हूँ।

इस शोध-प्रबंध की पूर्णता में मेरे माता-पिता, मेरे भाई मनोहर, मधुकर, धनाजी और छोटी बहन आशा इन सभी का श्रेय है, जिन्होंने पारिवारिक चिंताओं से मुक्त रखकर मुझे प्रोत्साहित किया।

मेरे मित्र-परिवार के सदस्य किशोर पाटील, अशोक बाचुळकर, गिरीश काशिद, अमोल कासार, हणमंत शेवाळे आदि की प्रेरणा तथा प्रोत्साहन मुझे निरंतर मिलता रहा। साथ ही विजय शिंदे, विजय राऊत, इन्नुस शेख, कु. वंदना पाटील, कु. नंदा उबाळे, कु. छाया पवार, कु. सुषमा लोखंडे, कु. कल्याणी पवार, सौ. मंगल सावंत आदि की शुभकामनाएँ मेरे साथ रही। अतः उनकी भी मैं आभारी हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथालय के उन सभी कर्मचारियों के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने मुझे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से मदद की।

इस प्रबंध का सुंदर रूप में टंकन करनेवाले अल्ताफ मोमीन की भी मैं आभारी हूँ।

अंत में सभी गुरुजनों, सहृदयों एवं आत्मजनों की प्रेरणा तथा सदिच्छाओं के लिए पुनश्च धन्यवाद।

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय - ''सुशीला टाकभौरे : व्यक्तित्व एवं कृतित्व'' पृ. 1-13

प्रस्तावना।

1.1 व्यक्तित्व।

1.1.1 जन्म तथा बचपन।

1.1.2 माता-पिता।

1.1.3 नानी।

1.1.4 भाई-बहन।

1.1.5 शिक्षा-दीक्षा।

1.1.6 परिवार।

1.1.7 अर्थोपार्जन।

1.1.8 बाह्य व्यक्तित्व।

1.1.9 आंतरिक व्यक्तित्व।

1.1.9.1 मिलनसार।

1.1.9.2 अतिथ्यशील।

1.1.9.3 संवेदनशील।

1.1.9.4 भावुक।

1.1.9.5 कल्पनाशील।

1.1.9.6 गंभीर।

1.1.9.7 हँसमुख।

1.1.9.8 मानवतावादी।

1.1.10 रूचियाँ।

1.1.11 साहित्यिक प्रेरणा।

1.1.12 यात्राएँ।

1.1.13 पुरस्कार।

1.2 कृतित्व।

1.2.1 कहानी संग्रह।

1.2.2 काव्य संग्रह।

1.2.3 लेख संग्रह।

1.2.4 विवरणात्मक पुस्तकें।

1.2.5 पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित रचनाएँ।

1.2.6 पत्र-पत्रिका में प्रकाशित समीक्षाएँ।

1.2.7 संपादन कार्य।

1.2.8 साहित्यिक, संस्थाओं से संबंध।

निष्कर्ष।

द्वितीय अध्याय- ''सुशीला टाकभौरे की कहानियों का वस्तुगत अध्ययन'' पृ. 14-40

प्रस्तावना।

2.1 कहानियों में वस्तुतत्त्व का महत्त्व।

2.2 डॉ. सुशीला टाकभौरे की कहानियों में वस्तुतत्त्व।

2.2.1 टूटता वहम।

2.2.2 अनुभूति के घेरे।

निष्कर्ष।

तृतीय अध्याय - ''सुशीला टाकभौरे की कहानियों का चरित्रगत अध्ययन'' पृ. 41-6

3.1 चरित्र-चित्रण का स्वरूप।

3.2 कहानी की पात्र-योजना।

3.3 कहानी में चरित्र-चित्रण का महत्त्व।

3.4 विवेच्य कहानियों में पात्रयोजना।

चतुर्थ अध्याय - ''सुशीला टाकभौरे की कहानियों में चित्रित समस्याएँ'' पृ. 67 -91

4.1 दलितों की समस्याएँ।

4.1.1 छुआछूत की समस्या।

4.1.2 जातिभेद की समस्या।

4.1.3 अशिक्षा की समस्या।

4.1.4 शोषण की समस्या।

4.1.5 व्यसनाधीनता।

4.1.6 आत्मविश्वास की कमी।

4.1.7 आर्थिक विपन्नता।

4.1.8 धार्मिक आड़ंबरों में विश्वास।

4.2 नारी समस्याएँ।

4.2.1 आशंकाओं से ग्रस्त नारी।

4.2.2 कुंठाग्रस्त नारी।

4.2.3 रूढ़ीवादी नारी।

4.2.4 नारी अहं की समस्या।

4.2.5 नारी मन का अंतर्द्वंद्व।

4.2.6 कामकाजी नारी की समस्या।

4.2.7 संत्रस्त नारी की समस्या।

4.2.8 निर्णयक्षमता का अभाव।

4.2.9 प्रेम की समस्या।

4.3 सामाजिक समस्याएँ।

4.3.1 अकेलेपन की समस्या।

4.3.2 अविश्वास की समस्या।

4.3.3 पारिवारिक समस्या।

4.3.4 रिश्तों में दरार।

4.3.5 एकतरफा प्रेम की समस्या।

4.3.6 बेटा-बेटी भेद।

4.3.7 सामाजिक रूढ़ियों और नैतिक मूल्यों की समस्या।

निष्कर्ष।

पंचम अध्याय - ''सुशीला टाकभौरे की कहानियों का शिल्पगत अध्ययन'' पृ. 92-114

5.1 शिल्प-स्वरूप।

5.2 शिल्प संबंधी कुछ विद्वानों के विचार।

5.3 शिल्प की अनिवार्यता।

5.4 सुशीला जी की कहानियों की शिल्प-विधि।

5.4.1 कथावस्तु।

5.4.1.1 प्रस्तावना।

5.4.1.2 मुख्यांश।

5.4.1.3 चरमसीमा।

5.4.1.4 पृष्ठभाग या परिणाम।

5.4.2 कथानक के गुण।

5.4.3 पात्र चरित्र-चित्रण।

5.4.3.1 चरित्रांकन के लिए आवश्यक गुण।

5.4.4 कथोपकथन / संवाद।

5.4.4.1 कथोपकथन का उद्देश्य।

5.4.4.2 कथोपकथन के गुण।

5.4.4.3 कथोपकथन का महत्त्व।

5.4.5 देशकाल तथा वातावरण।

5.4.5.1 देशकाल तथा वातावरण के गुण।

5.4.5.2 देशकाल का महत्त्व।

5.4.6 भाषा शैली।

5.4.6.1 भाषा।

5.4.6.2 शैली।

5.4.6.3 शैली के गुण।

5.4.6.4 कहानी की प्रमुख शैलियाँ।

5.4.6.5 शैली का महत्त्व।

5.5 सुशीला जी की कहानियों की भाषा।

5.6 उद्देश्य।

निष्कर्ष।

उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूची।